द्वितीय अध्याय

भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों का सामान्य परिचय —

उपन्यास —

१) पतन
२) चित्रलेखा
३) तीन वर्ष
४) टेढ़े - मेढ़े रास्ते
५) आखिरी दाँव
६) अपने खिलौने
७) भूले - बिसरे चित्र
८) वह फिर नहीं आयी
९) सामर्थ्य और सीमा
१०) थके पाँव
११) रेखा
१२) सीधी - सच्ची बातें
१३) सबहिं नचावत राम गुसाईं
१४) प्रश्न और परीक्षिका

प्रस्तावना --

उपन्यास साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंदोत्तर युग में प्रेमचंदीय परम्परा के निकट बैठनेवाले उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा का महत्वपूर्ण स्थान है । यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि उन्होंने उस परम्परा का परिष्कार किया है । कहानी और पात्र दोनों पर समान दृष्टि रखने के कारण डॉ.देवराज उपध्याय ने भगवतीचरण वर्मा को `प्रेमचंद का संशोधित संस्करण` कहा है । उनका लेखन छायावादी युग में ताजगी से भरा था तो आज भी ताजगी से युक्त है । आम तौर पर यह माना जाता है कि पुरानी पीढ़ी के उपन्यासकार भाव-बोध ,भाषा और शिल्प के स्तर पर नयी पीढ़ी के साथ कदम नहीं मिला सके । इसलिए नवीन युग और उनके अनुभवों के बीच थोडा फासला आ गया । किन्तु भगवती बाबू की कृतियों को समय की मार धुंधला नहीं कर सकी । साथ ही उनकी यह विशेषता रही है कि बदलते हुए समय का चित्रण उनके उपन्यासों में हुआ है ।

भगवती बाबू का उपन्यास लेखन उस समय शुरू हुआ था जब हिन्दी उपन्यास साहित्य अपना स्वरूप ग्रहण कर रहा था । प्रेमचंद अपने समाज-सापेक्ष दृष्टिकोण से तत्कालीन राष्ट्रीय समस्याओं पर कथा-साहित्य का सृजन कर रहे थे । उस समय पाप-पुण्य जैसी सूक्ष्म समस्या पर `चित्रलेखा` जैसी सशक्त और कोमल कृति का निर्माण हुआ । जब प्रेमचंद द्वारा स्थापित मानदण्डों के आधार पर सामाजिक उपन्यासों की रचना होने लगी, जिसमें यथार्थ के प्रति आग्रह बढ़ा तब भगवती बाबू ने भारतीय समाज के स्वरूप को उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत किया । भगवती बाबू ने हिन्दी उपन्यास जगत को कुल मिलाकर चौदह उपन्यास दिये हैं । इसीलिए कहा जायेगा कि भगवती बाबू हिन्दी के अमर हस्ताक्षर हैं और उपन्यास साहित्य में उनका योगदान अविस्मरणीय है ।

भगवती बाबू चौदह उपन्यासों का अध्ययन हम संक्षेप में करेंगे ।

१) पतन --

`पतन` भगवती बाबू का पहला उपन्यास है । इसकी कथा एक साधारण-सी जासूसी अथवा घटना प्रधान कहानी होकर रह गयी है । `पतन` का कथानक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि लिए हुए है । कहानी वाजिद अली शाह के समय की है, जब अवध का राज्य पतन के कगार पर खडा था । नवाब साहब की विलासिता राज्य के लिए खतरनाक साबित हो रही थी । लेखक द्वारा चित्रित नवाब अपने संभावित पतन को `खुदा की मर्जी` स्वीकार करते हुए परियों के आखाडे में व्यस्त दिखलाई पडते हैं जबकि उनके राज्य में चारों ओर रिश्वत और भ्रष्टाचार का बोलबाला था ।

`पतन` में प्रतापसिंह और रणवीर नामक व्यक्तियों को मुख्य कथा का स्त्रोत बनाया है । प्रतापसिंह स्वभावत: षाडयंत्रकारी एवं कामुक व्यक्ति है जो स्वयं अनुभव करता है कि वह शैतान के हाथ बिक चुका है । प्रतापसिंह ने अपने एक बालमित्र के पूत्र रणवीर को पाल-पोसकर बडा किया है जिसे वह वास्तव में बहुत चाहता है किन्तु उसकी प्रेयसी सुभद्रा को भी वह अपनी दानवी शक्ति से सम्मोहित करके वाजिद अली शाह की बेगम बनवा देता है ताकि वह उसकी वासनापूर्ति की साधन बन सके ।

कानपुर में ही प्रकाशचंद्र नामक व्यक्ति रहता है जिसकी पत्नी सरस्वती अद्वितिय सुन्दरी है । पति की शुष्कता के कारण वह प्रेम की प्यासी है ।प्रकाशचंद के मित्र भवानी शंकर के साथ उसकी आत्मीयता बढती है और दोनों ही एक - दूसरे पर आसक्त हो जाते हैं । अपने आप को पतन से बचाने के लिए भवानीशंकर अपनी पत्नी उर्मिला के साथ अपने चाचा मुंशी रामसहाय के पास चला जाता है । प्रकाशचंद्र और सरस्वती भी लखनऊ पहुँचते हैं और सुभद्रा का वियोग दुख दूर करने के लिए विदेश भ्रमण करता हुआ रणवीर भी । प्रतापसिंह पहले से ही ज्योतिषी राधारमण का रूप धारण किए, नवाब वाजिद अली शाह के दरबार में अपना प्रभाव जमाकर लखनऊ में विद्यमान है । सभी की एक - दूसरे से भेंट होती है और फिर लेखक ने कल्पना की वो उडानें भरी हैं कि तिलस्मी कहानी भी उसकी कहानी

के आगे पानी माँगने लगती है ।

प्रकाशचन्द्र प्रताप सिंह का शिष्य है फिर भी प्रताप सिंह उसकी पत्नी सरस्वती को सम्मोहित कर लेता है । सरस्वती रणवीर को भी अंकशायिनी बनना चाहती है । भवानीशंकर को अपने तथाकथित पतन का कारण बतलाते ही वह फिर भवानीशंकर को अपना बना लेने का संकल्प करती है । जब सरस्वती के साथ भवानीशंकर गंगा पार होता रहता है तभी उसके चाचा उसे देखकर किनारे से पुकारते हैं । सरस्वती पागल की तरह नाव उलट देती है,ताकि भवानीशंकर के साथ मर सके । किन्तु भवानीशंकर तैरकर वापस परिवार से जा मिलता है और सरस्वती गंगा में डूब जाती है ।

उपन्यास में गुलनार,प्रतापसिंह और बन्दे हसन की कहानी भी चलती है । मुहम्मद याकूब का कैदी बनने के बाद अपने अपमान का बदला प्रतापसिंह उसकी बेटी गुलनार को सम्मोहित करके लेता है । गुलनार के कहने पर उसका प्रेमी बंदे हसन प्रतापसिंह को छुडाता है । कैद से छुटकर प्रतापसिंह गुलनार को अपने साथ लेता जाता है । मुहम्मद याकूब प्रतिशोध की भावना से प्रतापसिंह को मारना चाहता है, गुलनार बीच में आती है और अपने पिता के हाथों मारी जाती है । प्रताप सिंह मुहम्मद याकूब को मारता है और गुलनार के शव के साथ गोमती कूदकर बंदे हसन आत्महत्या कर लेता है ।

दूसरी तरफ रणवीर किसी तिलिस्मी उपन्यास के ऐयार की तरह औरत का वेश बनाकर सुभद्रा से मिल लेता है । सुभद्रा सिग्मआरा की मदद से रणवीर के साथ भाग जाती है । प्रतापसिंह अपने आप को पराजित समझाता है और उनका पिछा करता है । जब वह नदी पार करते हुए रणवीर और सुभद्रा के पास तक पहुँचता है तब रणवीर उसे छुरा भोंक देता है । प्रताप सिंह मरते मरते नाव उलट देता है और तीनों ही नदी में डूब मरते हैं । इस तरह वाजिद अली शाह को छोडकर अन्य सभी को लेखक नदी में डुबोकर समाप्त कर देता है ।

२) चित्रलेखा —

सन १९३४ में प्रकाशित `चित्रलेखा` भगवती बाबू का दूसरा उपन्यास है । भगवती बाबू चित्रलेखा के रचयिता के रूप में ही सर्वाधिक ख्यात हैं । ऐतिहासिक महत्व की दृष्टि से तथा सर्जनात्मक स्तर पर भी यह हिन्दी की अत्यंत महत्वपूर्ण कृति है । इसके महत्व का अन्य कारण लक्ष्मीकांत वर्मा ने यह माना कि `इस उपन्यास से उन नये मूल्यों के स्वर अधिक उभरकर आने लगे जो अभी तक दबे थे और संस्कारों के बोझ से कराह रहे थे । यही नहीं `चित्रलेखा` उन अनेक सामाजिक समस्याओं की पूर्ति थी जो `सेवासदन`, `प्रेमाश्रम`, `कर्मभूमि` और `रंगभूमि` में प्रेमचंद द्वारा प्रस्तुत की गई थी ।`[१]

`चित्रलेखा` भगवती बाबू की विशिष्ट कृति इस अर्थ में भी है कि मात्र एक कहानी कहने के लिए इसका सृजन नहीं हुआ है जैसा कि उनके कुछ अन्य उपन्यासों का उद्देश्य रहा है । पाप और पुण्य के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए उपन्यास की रचना हुयी है । श्वेतांक सामंत बीजगुप्त का सेवक बनकर तथा विशालदेव योगी कुमारगिरि का शिष्य बनकर एक ही समस्या का समाधान पाने का प्रयास करते हैं । बीजगुप्त सांसारिक सुखों पर विश्वास करनेवाला व्यक्ति है और कुमारगिरि त्यागी एवं संयमी संन्यासी है ।

बीजगुप्त की `प्रेयसी नर्तकी चित्रलेखा सम्राट चंद्रगुप्त की सभा में योगी कुमारगिरि को परास्त करके स्वयं ही कुमारगिरि के आकर्षण में बंध जाती है । यह आकर्षण इतना प्रबल हो उठता है कि वह वैभव को तिलांजलि देकर कुमारगिरि का शिष्यत्व ग्रहण करने उसके आश्रम में चली जाती है । योगी कुमारगिरि चित्रलेखा को अध्यात्मिक ज्ञान तो नहीं दे पाता बल्कि स्वयं ही नर्तकी के रूप-जाल में फँसकर साधना भ्रष्ट हो जाता है । इधर बीजगुप्त , जो चित्रलेखा से अथाह प्रेम करता है, जीवन के भयानक अभाव को यशोधरा से विवाह करके भरना चाहता है किन्तु जब उसे मालूम होता है कि, श्वेतांग यशोधरा से प्रेम करता है तब वह अपनी सम्पति और

उपाधि श्वेतांक को दान करके भिखारी बनकर निकल पडता है ।

नर्तकी चित्रलेखा को अपनी भूल का ज्ञान होता है और वह पश्चाताप की अग्नि में जलकर कुन्दन बन जाती है । जब चित्रलेखा बीजगुप्त के साथ जाना चाहती है तब वह उसे भी भिखारिन के रूप में स्वीकार करता है । इस संपूर्ण घटना - प्रवाह को श्वेतांक और विशालदेव अत्यंत निकट से देखते हैं और दोनों ही उससे अलग-अलग प्रभाव ग्रहण करते हैं । श्वेतांक को अनुभव होता है कि बीजगुप्त देवता है और कुमारगिरि पापी है तथा विशालदेव को लगता है कि कुमारगिरि महान है बीजगुप्त पतित है ।

३) तीन वर्षा --

तीन वर्षा उपन्यास में भगवती बाबू ने आधुनिक समाज का चित्रांकन किया है । आधुनिक व्यवस्था ने मनुष्य के अंदर जो अर्थ पिपासा भर दी है उसने मानवीय संबंधों में कैसी खराश उत्पन्न कर दी है इस बात को यह उपन्यास सामने रखता है ।

उपन्यास के पहले भाग की पृष्ठभूमि इलाहाबाद विश्वविद्यालय है । झांसी से इलाहाबाद आया हुआ रमेश शहरी वातावरण से भौंचक्का हो जाता है । वहाँ उसका परिचय कुंवर अजित सिंह से होता है । सर कृष्ण शंकर की लडकी प्रभा के प्रति, जो उसकी सहपाठिन है, रमेश आकर्षित होता है अजित बार-बार रमेश को सावधान करता है कि वह प्रभा से प्रेम करके गलती कर रहा है । रमेश प्रभा के प्रेम में इतना डूब जाता है कि बी.ए. में उसे सेकण्ड डिवीजन मिलता है । जब रमेश विवाह का प्रस्ताव लेकर प्रभा के पासजाता है तब उसे यह जानकर भयानक आघात पहुँचता है कि प्रभा के लिए विवाह मात्र एक आर्थिक समझौता है । अपनी आवश्यकताओं को सर्वाधिक महत्व देते हुए वह विवाह प्रस्ताव यह कहते हुए अस्वीकृत कर देती है कि वे बिना विवाह एक दूसरे से प्रेम कर सकते हैं । भावुक रमेश प्रेम और मानवीयता पर विश्वास खो बैठता है । अजित उसकी असफलता पर व्यंग्य करता है तब वह अजित की ही पिस्तौल से अजित पर गोली चला बैठता है । अजित

को हल्की चोट आती है किंतु रमेश शर्मिन्दगी के कारण इलाहाबाद छोडकर चला जाता है ।

उपन्यास का दूसरा खण्ड अपेक्षाकृत क्षिप्र एवं घटना प्रधान है - साथ ही संयोग से भरा हुआ । रमेश बेहताशा शराब पीने लगता है और प्रेम को केवल धोखा समझने लगता है । ट्रेन में विनोद मिल जाता है जो कानपुर, अपने घर आमंत्रित करता है । कानपुर में रमेश विनोद के साथ वेश्याओं के कोठों तक भी जाता है । वहाँ उसकी भेंट सरोज नामक वेश्या से होती है, जो मजबूरी से वेश्या बनी है क्योंकि उसकी माँ भी वेश्या थी । रमेश के व्यवहार से सरोज प्रभावित होती है । रमेश यह समझता है कि सरोज उसे धनवान समझकर उससे धन ऐंठने की चाल खेल रही है । वह सरोज के लिए पत्र छोडकर भाग खडा होता है । रमेश के वियोग में सरोज को तपेदिक हो जाता है । वह अखबार में विज्ञापन देती है कि वह मृत्यू शय्या पर है और रमेश से मिलना चाहती है । विज्ञापन पढकर रमेश सरोज के पास जाता है और सरोज अपनी सारी सम्पति रमेश को देकर उसके चरण में दम तोड देती है । रमेश के मन में फिर से मानवीय प्रेम के प्रति विश्वास जी बैठता है । वह एक बार फिर इलाहाबाद आता है । उसे धनी जानकर प्रभा उससे विवाह करना चाहती है तब रमेश उसे वेश्या निरूपति करते हुए उसके प्रस्ताव को अस्वीकृत कर देता है । ब्रजसिंह के अनुसार " तीन वर्षों के कथानक में वर्माजी के स्पष्टता तीन मूल उद्देश्य प्रणित होते है - पैसे की सर्वव्यापी शक्ति, प्रेम का वास्तविक रूप और वेश्या सुधार की समस्या ।" [२]

४) टेढे-मेढे रास्ते --

सन १९४६ में प्रकाशित " टेढे-मेढे रास्ते " भगवती बाबू का विशुध्द राजनैतिक उपन्यास है । " योग्यतम ही जीवित रहता है " सिध्दांत के कट्टर समर्थक पंडित रामनाथ तिवारी बानापुर के ताल्लुकेदार है जो अंग्रेज सरकार अपने हितों को एक ही समझते है अत: चाहते है कि अंग्रेज सरकार भारत में हमेशा कायम रहे ।

उनका बडा लडका दयानाथ कांग्रेसी हो जाता है तब वे उसे सलाह देते हैं कि वह कांग्रेस छोड दे क्योंकि कांग्रेस जमींदारों की समर्थक और ब्रिटिश सरकार की विरोधी है । दयानाथ अपने सिध्दांतों पर आस्था व्यक्त करता है तब वे उसे विरोधी घोषित करते हुए घर से निकाल देते हैं । दयानाथ कानपुर कांग्रेस का डिक्टेटर बन कर जेल जाता है तब रामनाथ प्रयास करते हैं कि दयानाथ की पत्नी और बच्चे उनके साथ बानापुर में रहें, पर दयानाथ की पत्नी इसके लिए तैयार नहीं होती । इस तरह दयानाथ से उनका संबंध समाप्त हो जाता है । उनका दूसरा लडका उमानाथ जर्मनी से पढकर लौटता है पूरी तरह कम्यूनिस्ट बनकर जर्मनी में वह दूसरा विवाह भी कर लेता है, जिसका पता केवल उसके छोटे भाई प्रभानाथ को रहता है और बाद में उसकी पत्नी महालक्ष्मी को भी हो जाता है । वह भारतवर्ष में साम्यवादी आंदोलन की संभावनाओं का सर्वेक्षण करता है और कानपुर में दयानंद के यहाँ रहकर साम्यवाद के प्रचार की भूमि तैयार करता है ।

उनका छोटा लडका प्रभानाथ वीणा नामक युवती के प्रभाव में आकर क्रांतिकारियों के दल में शामिल हो जाता है । ट्रेन में आते हुए सरकारी खजाने पर डाका डालते हुए प्रभानाथ घायल हो जाता है । अपने चाचा श्यामनाथ, जो एस.पी. हैं, के द्वारा ब्याह जाने का प्रयास किए जाने पर पकडा जाता है । प्रभानाथ को टार्चर से बचाने के लिए वीणा, उसकी पत्नी का स्वांग भर कर, जेल में उसे पोटेशियम साइनाइड दे देती है फिर सी.आई.डी. इन्सपेक्टर विश्वम्भर दयाल को गोली मार कर स्वयं आत्महत्या कर लेती है । श्यामनाथ इस झटके को सहन नहीं कर पाते - पागल हो जाते हैं ।

उमानाथ के नाम वारंट निकलता है । वह भारत छोडने के लिए पिता से पैसे मांगता है लेकिन किसी भी साम्यवादी को मदद के लिए तैयार नहीं । उमानाथ को उसकी पत्नी की सहायता मिलती है । वह अपने सारे जेवर उसे दे देती है । दयानाथ कांग्रेस के सभापति पद के लिए चुनाव लडता है, इसमें वह हार जाता है । वह कांग्रेस छोडकर पिता के पास लौटता है, किन्तु पंडित रामनाथ कहते हैं कि, एक बार

व्यक्ति को आगे बढकर पीछे नहीं लौटना चाहिए । पंडित रामनाथ तिवारी अपने अहम् को छाती से छिपकार घर में अकेले रह जाते हैं । अत्यंत उद्विग्न अवस्था में जब वे अपने पोते को देखते हैं तब उन्हें ज्ञात होता है कि वे टूट चुके हैं । उपन्यास का अंत इस तरह होता है और उस समय उन्हें अनुभव हुआ कि दूसरों को उनके सहारे की जरूरत नहीं रही । अब उनको उस बच्चे की सहारे की जरूरत है ।

५) आखिरी दाँव --

सन १९५० में प्रकाशित उपन्यास 'आखिरी दाँव' मानवीय नियति की आस्थिरता को दर्शाता है । इस उपन्यास के कथानक के सभी उपकरण जीवन की अस्थिरता और अनिश्चितता को सिध्द करते हैं । कथा का प्रारंभ होता है उत्तर प्रदेश के एक गाँव से जहाँ रामेश्वर अपने खेत से लौट रहा था । अनाज कट चुका था । व्यापारीने अनाज खरीदा था और रामेश्वर के पास पाँच सौ रुपये थे । इसलिए रामेश्वर प्रसन्न था । लेकिन रामेश्वर बाहर से आये हुए जुआरियों के साथ जुआ खेलकर केवल पाँच सौ रुपये ही नहीं बल्कि अपनी जमीन और मकान भी दाँव पर हारकर गाँव छोड देता है । दूसरे परिच्छेद में नायिका चमेली के कष्टप्रद गृहस्थ जीवन की झलक दिखाई देती है । बंबई में रत्नू चमेली को धोखा दे देता है और रामेश्वर उसे अपने घर ले आता है । दोनों एक दूसरे का सहारा बनने का प्रयास करते हैं ।

रामेश्वर लादगीर की नौकरी करता है । चमेली को एक पान ठेला खुलवा देता है । चमेली के जीवन में सेठ शिवकुमार और राधा का आना एक मोड उत्पन्न करता है । उनका सुविधापूर्ण जीवन चमेली के अंदर पैसों की तृष्णा को जन्म देता है । रामेश्वर सट्टे में सेठ के चार हजार रुपयें हार जाता है । चमेली को शिवकुमार की असली नीयत का पता लगता है अत: वह फिल्म कम्पनी में नहीं जाना चाहती किंतु रामेश्वर को जेल से बचाने के लिए वह हिरोईन बनना स्वीकार कर लेती है । वह शिवकुमार के आगे समर्पण कर देती है । रामेश्वर की सरल ग्रामीण आत्मा को लगता है कि, पैसा ही सबसे बडी शक्ति है उसे किसी भी

KOLHAPUR

तरह प्राप्त करना चाहिए । अपने निश्चय को परिक्त करने के लिए वह रघुनाथ दादा का तबेला खरीदता है और तबेले की आड में शराब बेचने और जुआ खिलवाने का कार्य करता है ।

चमेली को प्रसिध्दि मिलती है और वह स्टूडियों की मैनेजिंग डाइरेक्टर और शेयर होल्डर भी बन जाती है । लेकिन वह शांति के लिए यह चाहती है कि, किसी तरह वह और रामेश्वर अपने अपने धन्दे को छोडकर केवल एक दूसरे के होकर शांत जीवन बिताएं । जिस दिन वे बंबई छोडकर जाने वाले थे उसकी एक रात पूर्व उसके जीवन में बडी तीव्रता से परिस्थितियाँ बदलती हैं । सेठ शितल प्रसाद चमेली को हस्तगत करने के लिए रामेश्वर के लिए जाल फैलाता है । चमेली को वह रोक रखना चाहता है किन्तु चमेली गोली मारकर उसकी हत्या कर देती है । जब चमेली रामेश्वर को सूचना देने उसके तबेले पहुँचती है तब रामेश्वर अपनी कमाई हुयी राशि से बंबई में आखिरी बार जुआ खेलने बैठ चुका था । चमेली उससे बार-बार कहती है कि पुलिस आ रही है अत: वह अपना बचाव करें पर रामेश्वर पागलों की तरह जुआ खेलता है । जब वह अपना आखिरी दाँव लगाता है, पुलिस आती है । गिरफ्तार होने के भय से दूसरे कमरें में चमेली आत्महत्या करती है । रामेश्वर निराश होकर कहता है " ले चलिए सार्जेण्ट साहब आज मैं जिंदगी में आखिरी दाँव हार चुका हूँ, ले चलिए ।"

६) अपने खिलौने --

` अपने खिलौने ` में जयदेव भारती की सुंदर और सुशिक्षिता पुत्री मीना भारती उच्च समाज की पार्टियों की रौनक है । मिल ओनर अशोक के साथ उसका विवाह तय हुआ है । अशोक की विधवा बुआ, मीना का ममेरा भाई रामप्रकाश सब मिलकर कला भारती संस्था खोलने का प्रयास करते हैं । इसके पिछे सभी के अपने अपने स्वार्थ हैं । यशनगर का युवराज वीरेश्वर प्रताप जो फ्रान्स में भारतीय राजदूत का प्रथम सचीव है, आने से हलचल मच जाती है । युवराज का प्रेम जीतने के

लिए अन्नपूर्णा और मीना में होड़ लग जाती है । अशोक और रामप्रकाश अपनी प्रेमिकाओं को प्राप्त करने के लिए क्या क्या उछलकूद करते हैं इसे लेखकने रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

युवराज की पार्टी में जाते समय अशोक मीना के सेंट में 'कॉड लिवर आचल' मिला देता है । दुर्गन्ध के कारण पार्टी में लोगों के दुवारा प्रकट की गई विरक्ति से मीना बीमार पडती है । तबियत सुधार के लिए मीना और अन्नपूर्णा कला भारती का प्रचार करने के लिए जाती हैं । लखनऊ में फिल्म डायरेक्टर सैंदा मीना को हिरोइन बनने का आमंत्रण देता है । ट्रेन में सैंदा और चेट्टियार दुवारा किये गये बुरे वर्तन से अन्नपूर्णा दुवारा पिस्तौल से गोली चलाने पर दोनों ही रास्ते में ही उतरते हैं । कैंदा कोमल नामक कलाकार युवती से घबराकर बंबई से भागा हुआ युवराज इन लोगों को भी बंबई बुलवा देता है । युवराज की फ्रॅन्सीसी मंगेतर उसे ढूँढती हुयी बंबई आ जाती है और मीना अशोक के साथ तथा अन्नपूर्णा रामप्रकाश के साथ बंबई से वापस लौट आती हैं ।

७) भूले - बिसरे चित्र --

सन १९५९ में प्रकाशित 'भूले - बिसरे चित्र' भगवती बाबू की सर्वश्रेष्ठ कृति कहा जा सकता है । यह हिन्दी साहित्य के उन उपन्यासों में से है जिनमें महाकाव्य के स्वर विद्यमान हैं । कथानक का आरंभ ४ जुलाई १८८५ से होता है । मुंशी शिवलाल के खुशामदखोरी से ज्वालाप्रसाद को नायब तहसीलदारी मिलती है । ज्वालाप्रसाद अपने पद पर ईमानदारी से काम करता है लेकिन शिवलाल को पसंद नहीं है । नम्बरदारिन जैदेई जो बहुत धनवान है मुन्शी शिवलाल अपने बेटे को सलाह देते हैं कि अत: ज्वाला को चाहिए कि वह जायदाद खडी कर लें । लेकिन ज्वालाप्रसाद ऐसा नहीं करना चाहता । अपने पिता, चाचा, और चचेरे भाई के रुपये कमाने के षडयंत्र में ज्वालाप्रसाद शामिल नहीं होता, इस बात पर क्रोधित होकर शिवलाल आत्महत्या लेते हैं । जैदेई ज्वालाप्रसाद के लडके को गंगाप्रसाद को पढाने -

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

लिखाने के लिए इलाहाबाद ले जाती है । वह एक अत्यंत सफल अफसर साबित होता है । कलक्टर के पद पहुँचकर उसकी असमय मृत्यू हो जाती है ।

गंगाप्रसाद का बेटा नवलकिशोर स्वाधीनता आंदोलन का पक्षधर है तथा लडकी विद्या भी नवीन विचारधारा की है । नवल लखपति का दामाद बनने के बदले कांग्रेस का कार्य करता है और नामक बनाओ आंदोलन में हिस्सा लेकर गिरफ्तार होने निकल पडता है । विद्या भी ससुराल के अत्याचार का विरोध करती है और अपने घर आ जाती है । ज्वाला को यह सब अजीब लगता है । इस परिवर्तन का तीव्र आभास देते हुए यह उपन्यास इस तरह समाप्त होता है -- " दो बुढे, जिन्होंने युग देखा था, जिंदगी के उतार चढाव देखे थे, जिन्होंने जिनके पास अनुभवों का भंडार था, विवश थे, निरुत्तर थे । और दूर हजारों लाखों, करोंडों आदमी जीवन और गति से प्रेरित नवीन उमंग और उल्लास लिए हुए एक नवीन दुनिया की रचना करने के लिए चले जा रहे थे ।"

८) वह फिर नहीं आयी --

सन १९६० में प्रकाशित " वह फिर नहीं आयी " भगवती बाबू का लघु उपन्यास है । आत्मकथनात्मक शैली में लिखा गया यह उपन्यास एक सामान्य घटना-प्रधान उपन्यास है । दिल्ली के एक होटल में ज्ञानचंद का परिचय रानी श्यामला से होता है जिसका पति जीवनराम उसके साथ है । ज्ञानचंद और श्यामला के प्रेम - संबंध बढते हैं और जीवनराम के साथ लेकर वे कानपुर आते हैं । जीवनराम को ज्ञानचंद अपने आफिस में काम दे देता है और श्यामली को रखैल बनाकर उसके साथ सैर-सपाटा करता है । जीवनराम ज्ञानचंद के जाली हस्ताक्षर बनाकर बैंक से बीस हजार रुपये निकाल लेता है । ज्ञानचंद जीवनराम को पुलीस के हवाले कर देता है । तब रानी श्यामला बताती है कि वास्तव में जीवनराम उसका पती है ।

ज्ञानचंद अपनी कहानी बताते हुए श्यामला कहती है कि लाहौर में जीवनराम को " राजा " खिताब मिला हुआ है । वह अपनी पत्नी के साथ सुखी जीवन

बीता रहा था । लाहौर में सांप्रदायिक दंगे हुए तब उनकी सारी संपत्ति लूट ली गई और घर जला दिया गया । जीवनराम के मित्र ने उनकी रक्षा की उसकी किमत के लिए मित्र ने बीस हजार रुपयों की माँग की । अपनी पत्नी को मित्र के यहाँ बंधक रखकर एक साल की अवधि लेकर जीवनराम चढा गया । कम्पनीसे बीस हजार का गबन कर उन पैसों से अपनी पत्नी को फिर से प्राप्त किया । वह पुलिस वारण्ट से बचने के लिए इधर उधर भटकता रहा । रानी श्यामला बताती है कि उसी वारण्ट से बचाने के लिए जीवनराम ने ज्ञानचंद का पैसा गबन किया । ज्ञानचंद जीवनराम को छुडा देता है लेकिन उसे यह भीख लेना पसंद नहीं । फिर से पत्नी को बंधक रखकर जीवनराम चला जाता है । साल भरके बाद धक्का -हारा जीवनराम लौटकर पत्नी की गोद में दम तोड देता है । श्यामला ज्ञानचंद को छोडकर वेश्यावृति अपनाती है । कुछ दिनों के बाद सम्पन्न बनकर ज्ञानचंद के बीस हजार रुपये लौटाने आती है । रुपये लौटाकर फिर चली जाती है और लौटकर कभी नहीं आती ।

९) सामर्थ्य और सीमा --

सन १९६२ में प्रकाशित भगवती बाबू का उपन्यास `सामर्थ्य और सीमा` सही अर्थों में एक प्रौढकृति है । औपन्यासिक तत्वों का सही संतुलन इस कृति में हमें देखने को मिलता है । `सामर्थ्य और सीमा` में लेखक मनुष्य की सामर्थ्य और उसकी सीमा का मूल्यांकन करता है ।

सुम्नपुर स्टेशन पर एक दिन पाँच व्यक्तियोंका आगमन होता है जिनमें है हिंदुस्तान के बडे भारी उद्योगपति रत्नचंद्र मकोठा, विश्वख्याति इंजीनियर वासुदेव चिंतामणि देवलंकर, सुप्रसिध्द दैनिक पत्र `रिपब्लिक` के प्रधान सम्पादक ज्ञानेश्वर राव, प्रसिध्द साहित्यकार एवं संसद सदस्य पंडित शिवानंद शर्मा और भारी कलाकार एवं आर्चटिक्ट अल्बर्ट किशन मसूर । ये सभी समर्थ व्यक्ति सुम्नपुर के विकास के लिए उत्तर प्रदेश के मंत्री जोखन लाल की ओर से आमंत्रित हैं । सुम्नपुर में इन व्यक्तियों की भेंट सुन्दरी और युवा किन्तु विधवा रानी मानकुमारी से होती है । मानकुमारी

के रूप पर सभी आसक्त हैं । रानी के मन में फिर से जीने की इच्छा प्रबल होती है । रानी की गिरती हुयी स्थिति के प्रति सभी को सहानुभूति होती है और हर एक अपनी ओर से रानी की सहायता करना चाहते हैं । रानी के मन में जीवन के परिवर्तन के इस पूर्वाभास से एक असीम उल्लास हिलोरे लेने लगता है ।

अपने जन्म-दिन के अवसर पर रानी इन सभी व्यक्तियों को यशनगर आमंत्रित करती है जहाँ एक उत्सव मनाया जानेवाला है । जिस सुबह अपनी-अपनी योजनाओं से आश्वस्त, सभी यशनगर से वापस जानेवाले थे आकस्मिक वर्षा के कारण रोहिणी का रुका हुआ पानी यशनगर में भीषाण बाढ के रूप में घुस पडता है । इसमें सभी को मृत्यू के सामने आत्मसमर्पण करना पडता है । रानी मानकुमारी और नाहरसिंह महल के ऊपर चढकर प्राण रक्षा का प्रयास करते हैं लेकिन भूकंप के झटके से यशनगर का महल टूट जाता है और वे अथाह जल-सागर में समा जाते हैं ।

१०) थके पांव --

सन १९६३ में प्रकाशित यह उपन्यास लघु उपन्यास है । उपन्यास के कथानक का प्रारंभ पचास वर्षों तक थके हारे केशव के जीवन से होता है । वह अनुभव करता है कि उसका सारा जीवन केवल विवशता की कहानी है । जब वह बी.ए.पास हुआ था हर आदमी की तरह उसने भी बडे-बडे सपने देखे थे । लेकिन बहन की शादी की समस्या होने के कारण उसे नौकरी करना आवश्यक था । धूप दौड के बाद उसे क्लर्की मिली और युवावस्था के सुनहरे सपनों को कुचलकर परिवार के लिए अनवरत परिश्रम करता है । उसका बडा लडका मोहन बी.ए.एलएल.बी.पास करके इंडियन एक्सपोर्ट में मॅनेजर हो जाता है लेकिन वहाँ की नौकरी छुटने के बाद उसे भी अपने पिता की तरह क्लर्की करनी पडती है ।

छोटा लडका किशन फक्कड और रंगीन मिजाज का है । वह बंबई जाकर अभिनेता बन जाता है और उसकी प्रेरणा से बहन माया की शादी करने से इन्कार कर माँ-बाप को बतलाए बिना फिल्मों में काम करने चली जाती है । मोहन को

12289
A

टी.बी.हो जाती है । एक लम्बे और खर्चिले इलाज से वह ठीक होता है । अभावग्रस्त केशव बाबू एक हजार रुपये रिश्वत लेते हैं लेकिन उनकी धर्मभिरु आत्मा की शांति नष्ट होती है । अपने अफिसर के सम्मुख जाकर अपना अपराध स्वीकार करते हैं और नौकरी से ईस्तीफा देते हैं । किशन और माया के भेजे हुए डेढ हजार रुपये तथा वे रिश्वत के पैसे अनाथालय को दान देकर आत्मग्लानि से छुटकारा पाते हैं ।

११) रेखा --

'रेखा' उपन्यास सन १९६४ में प्रकाशित हुआ । यौन-कुंठाओं से ग्रस्त रोमानी आदर्श और कटु यथार्थ के बीच भटकती हुयी विवाहिता स्त्री की यह कहानी है । दर्शन-शास्त्र की एम.ए.की छात्रा रेखा अंतरराष्ट्रीय ख्याति के प्रोफेसर डा.प्रभाशंकर के व्यक्तित्व से अत्यंत प्रभावित होती है । आदर्श और भावुकता से भरे हुए प्रेम से प्रेरित होकर रेखा ज्ञानदार व्यक्तित्व के मालिक किंतु वार्धक्य की बढते हुए प्रोफेसर के विवाह के प्रस्ताव को स्वीकृत करके प्रोफेसर से परिणयसूत्र में बंध जाती है ।

विवाह के बाद शारीरिक अतृप्ति के रूप में उसके जीवन का विद्रूप रेखा के सामने आता है । सोमेश्वर,मंसूरी में निरंजन कपूर,मेजर यशवंत सिंह तथा योगेन्द्रनाथ के साथ शरीर संबंध स्थापित होता है । सभी उसे अपने साथ ले जाने को तैयार हैं लेकिन किसी के साथ वह जाती नहीं । दिल्ली में रीडर बनकर आये हुए डा.योगेन्द्रनाथ के साथ रेखा का गहरा संबंध स्थापित होता है जिसका पता प्रोफेसर को लगता है । अत्याधिक तनाव के कारण प्रोफेसर को हार्ट अटैक हो जाता है । योगेन्द्रनाथ के साथ रेखा जाने के लिए तैयार होती है,किन्तु बीमार प्रोफेसर को देखकर रुक जाना चाहती है । योगेंद्रनाथ से फोन पर बात करती है । प्रोफेसर क्रोध में आकर उससे अपशब्द कहते हैं तो वह सूटकेस लेकर एयरोड्रम भागती है । वहाँ योगेंद्रनाथ का हवाई जहाज रवाना हो चुका था । वह वापस लौटती है तो पाती है कि इस बीच उसके पती की मृत्यू हो गई है । विक्षिप्त सी रेखा डाक्टर से कहती

है कि आप जानते हैं नियति ने मेरे साथ बहुत बडा खिलवाड किया है, लेकिन मैं रेखा - रेखा । सब मिट गए, लेकिन यह रेखा मिट-मिटकर भी अमीट है । जाइए अब सोइए जाकर ।" ४

१२) सीधी-सच्ची बातें --

'सीधी- सच्ची बातें' सन १९६८ में प्रकाशित भगवती बाबू का डिमाई आकार का - पाँच सौ चौंसठ पृष्ठ का बृहत उपन्यास है । इलाहाबाद विश्वविद्यालय के शेाध-छात्र जगत प्रकाश को केन्द्र बनाकर कथानक का ताना - बाना गूंथा गया है । जसवंत कपूर, त्रिभुवन मेहता, कुलसुम कावराजी तथा मालती बेन का परिचय उसके जीवन की धारा बदल देता है । इनसे परिचित होने के बाद से उपन्यास के अंत तक जगत् प्रकाश कैरम के 'स्ट्राइकर' की तरह इधर से उधर 'रिबाउंड' होता रहता है । जमील काका से भेंट होती है और साम्यवादी विचारधारा का पहला पाठ भी पढता है । कुलसुम के प्रति उसके मन में आकर्षण होता है । वेश गोपाल वकील एवं रूपलाल इस्पेक्टर के षड्यंत्र से उसे कम्यूनिस्ट होने के संदेह में गिरफ्तार करके देवली कंसेन्ट्रेशन कॅम्प भेज दिया जाता है । वहाँ वह कम्यूनिस्ट बन जाता है ।

जगत-प्रकाश के जीवन में तरह-तरह के उतार-चढाव आते हैं । अंत में वह केवल कुलसुम के पैसों और प्यार के सारे दिन काटते हुए सारी दुनिया की गतिविधि से परेशान होते हुए अपने को दुनिया में 'मिसफिट' पाता है । गांधीजी की हत्या का समाचार सुनकर उसका हार्ट-फेल हो जाता है और स्वप्नलोक में विचरण करनेवाली उसकी प्रेमिका उसे 'फरिश्ता' का खिताब दे देती है ।

१३) सबहिं नचावत राम गुसाईं -- BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

सन १९७० में प्रकाशित भगवतीचरण वर्मा का उपन्यास 'सबहिं नचावत राम गुसाईं' कथ्य और शिल्प के अद्भूत संतुलन के कारण उनकी परवर्ती कृतियों में यह कृति सर्वाधिक महत्वपूर्ण है । उपन्यास चार खण्डों में लिखा गया तीन विभिन्न कहानियों

को सामने रखता है । तीनों कहानियों में तीन मुख्य पात्रों की तीन पीढियों का क्रमिक विकास है । लाला घासीराम जो किरानी है कम तौलना तथा डण्डी मारकर बेईमानी से हजारों की दौलत कमा लेता है । उसका पुत्र मेवालाल अपनी जालसाजी के बल पर अपने पिता की हजारों की दौलत लाखो में बदल देता है । मेवालाल का लडका राधेश्याम अपनी बुध्दि के बल पर देश का बडा भारी उद्योगपति बन जाता है । स्वतंत्र देश में भी बेइमानी से प्रदेश के गृहमन्त्री जबरसिंह की आत्मा को पैसे से खरीद कर वह बडे भारी उद्योग की स्थापना की योजना बनाता है ।

तिसरे खण्ड में राजाओं और ताल्लुकेदारों की गिरती हुयी हालत का बयान है । ईमानदारी और सिध्दान्तप्रियता जैसे गुणों को लेकर रामलोचन पाण्डे भ्रष्ट समाज में कानून का सच्चा रक्षक बनने का प्रयास करता है । अपनी न्याय-बुध्दि से प्रेरित होकर रामलोचन पाण्डे गृहमंत्री के आदेश की अवज्ञा करके परम-मित्र भ्रष्ट राधेश्याम को गिरफ्तार करता है । चौथे खण्ड में रामलोचन पाण्डे जबरसिंह को चुनाव में हराता है और साबित करता है कि सबल और साधन सम्पन्न होने के बाद भी बुराई पराजित होती है ।

१४) प्रश्न और मरीचिका --

सन १९७३ में प्रकाशित 'प्रश्न और मरीचिका' भगवती बाबू का नवीनतम बृहत उपन्यास है । चार खण्डो का यह उपन्यास १५ अगस्त १९४७ से लेकर १९६३ तक के भारतीय समाज की उथल-पुथल पर आधारित है । आत्मकथनात्मक शैली में लिखा गया वह उपन्यास वास्तव में एक व्यक्ति अथवा परिवार की कहानी नहीं है । पहले खण्ड में नायक उदयराज के व्यक्तिगत जीवन से जुडा है । उदयराज श्रीवास्तव भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय के ज्वाइंट सेक्रेटरी श्री जयराज उपाध्याय,आय.सी.एस. को त्याज्य पुत्र है । कांग्रेस के प्रभावशाली नेता शर्मा का सेक्रेटरी बन जाता है । मुसलमान की लडकी सूरय्या से उसका प्रेम होता है लेकिन सांप्रदायिकता के कारण उसे पाने में असफल होता है ।

दूसरे खण्ड में शर्माजी जैसे कर्मठ और ईमानदार व्यक्ति राज नैतिक मंच से हटाए जाते है जहाँ श्रीमती रमा शर्मा राजनैतिक क्षेत्र में प्रभाव जमकर अर्थ लोलुप

और सिध्दांतहीन महिला लखपति बन रही थी । देश की राजनीति जवाहरलाल नेहरू के आस-पास सिमट आयी है । भाषा और मजहब की कटुता बढती जा रही थी । आई.सी.एस.आफीसर मदान की लडकी से प्रमिला से विवाह होता है ।

तीसरे खण्ड में स्वतंत्र भारत के बढते हुए राजनैतिक संबंधों तथा विरोधी पार्टियों के नेताओं की कुंठाओं को भी कथानक अपने में समेट लेता है । प्रेम,मदान और मंजीत तथा मेजर अमरजीत और कान्ता की कथाओं के माध्यम से उच्च वर्ग की खोखली नैतिकता और अर्थलोलुपता सामने आती है । तिसरे और चौथे खण्ड तक भी चलनेवाले लता और अंजनी कुमार का प्रकरण उपयोगी होने के बाद भी अपने भीतर छिपे सामाजिक संदर्भ को पूर्ण सफलता से प्रकाशित नहीं कर सका है । चौथे खण्ड में लेखकने सभी कथाओं को समेटता है । मुहम्मद शफी और केशरबाई ,मेलाराम, अंजनिकुमार आदि सभी कथाओं को निचोडकर लेखक उनके सामाजिक और दार्शनिक संदर्भ का अर्क निकालने की कोशिश करता है । पतन के गर्त में आकंठ डूबे समाज की किंकर्तव्यविमूठता और बेबसी का नक्शा उपन्यास के अंत तक स्पष्ट हो जाता है ।

निष्कर्ष --

आधुनिक हिन्दी साहित्य में ` उपन्यास` विधा एक देन है । उपन्यास के द्वारा लेखक मनोरंजन के साथ - साथ एक उद्देश्य तक पहुँचता है । उद्देश्य उपन्यास का महत्वपूर्ण अंग है । उपन्यास में लेखक अपनी दृष्टिकोण से सारे परिवेश पर लिख सकता है । भगवतिचरण वर्मा ने हिन्दी साहित्य में उपन्यासों का निर्माण कर अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है ।` पतन` से लेकर` सबहिं नचावत राम गुसाई ` उपन्यासों में अलग - अलग विषय होकर भी वे एक दूसरे से घुल-मिलकर गये हैं । वास्तव में ` चित्रलेखा` उपन्यास से ही भगवतीबाबू ख्यातनाम हो गये हैं ।

वर्माजी ने अपने उपन्यासों में जीवन के चित्र दिये हैं । उनके उपन्यासों में यथार्थवादी दृष्टिकोण एक विशिष्टता है जो प्रभावित किये बिना नहीं रहता ।

वर्माजी के उपन्यासों में हमें समस्याओं का चित्रण दिखाई पडता हैं । ` चित्रलेखा ` उपन्यास में ` पाप-पुण्य ` जैसे गहन विषाय की समस्या का निर्माण हुआ हैं । उद्देश्य को लेकर वर्माजी ने उपन्यास लिखे हैं ।

अपने उपन्यासों में भगवती बाबू व्यक्ति की स्वतंत्रता का घोर समर्थन करते हुए दिखलाई पडते हैं । उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से नैतिकता के प्रचिलित मानदण्डो से अपनी स्वीकृति व्यक्त की हैं । ` चित्रलेखा `, ` तीन वर्षा `, ` आखिरी दाँव ` , वह फिर नहीं आयी `, ` रेखा ` ये उपन्यास भगवती बाबू के नैतिकतासंबंधी व्यक्तिगत दृष्टिकोण को सामने रखते हैं । उपन्यास और कहानीवाले तत्व को प्राथमिकता देने के कारण, विचार-पक्ष प्रबल होने पर भी, उनकी रचनाओं में उनका साहित्यिक व्यक्तित्व अलग उभरकर नहीं आया हैं । सोद्देश्य रचना होने के कारण वर्माजी की रचनाओं में कतिपय विशिष्ठताएँ उत्पन्न हो गयी हैं । कथानक तथा पात्रों की संयोजना पूर्व निश्चित रही हैं । मनोरंजन की सृष्टि करना उनके उपन्यास साहित्य का मुख्य उद्देश्य हैं । भाषाशैली पर वर्माजी का पूरा अधिकार हैं । इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते ही वर्माजी का उपन्यास साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं ।

संदर्भ

१ डा.रमाकान्त श्रीवास्तव - व्यक्तिवादी एवं नियतिवादी चेता के संदर्भ में उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा, पृ.१०९

२ ब्रजनारायण सिंह - 'उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा' पृ.३०

३ भगवतीचरण वर्मा - 'भूले बिसरे चित्र' पृ.५६०

४ भगवतीचरण वर्मा - 'रेखा' पृ.३५१